सत्ता का अहंकारी न बनेः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, मेवाड स्तरीय किशोर मंडल सम्मेलन का समापन

केलवाः 10 सितम्बर

तेरापंथ के 11वें अधिष्ठाता आचार्यश्री महाश्रमण ने राजनेताओं और जनप्रतिनिधियों से आह्वान किया कि वे सत्ता के मद में कभी अहंकारी न बने। जनता का विश्वास जीतने और उनके दुख दर्द में बराबर का भागीदार बनने का प्रयास करें। अहंकार व्यक्ति को विनाश के पथ पर धकेलता है।

आचार्यश्री ने यह उद्‌गार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास के दौरान प्रवचन दे रहे थे। उन्होंने कहा कि किसी व्यक्ति को अगर ज्यादा ज्ञान मिल जाए तो भी उसे अहंकारी नहीं बनना चाहिए। इसे अन्य लोगों में बांटने का प्रयास करें ताकि उनका भी कल्याण हो सके। आज प्रायः यह देखा जाता है कि किसी के पास धन दौलत ज्यादा आ गई है तो वह अहंकारी बन जाता है। इसमें अहंकार की क्या बात है। लक्ष्मी कभी एक जगह नहीं ठहरती। यह कभी इस घर और कभी उस घर चलती रहती है। फिर अहंकार क्यों। यह हमें अपने लक्ष्य से दूर करने का प्रयास करता है। इसलिए कभी भी मन में अहंकार, घमंड और ईर्ष्या का भाव नहीं आने दें और आत्मा के कल्याण के लिए त्याग और साधना की ओर जाने का प्रयास करें। आचार्यश्री ने कहा कि हमारी दुनियां में मनभावन पदार्थ होते है। अच्छी गंध भी होती है। इनको प्राप्त करने के लिए और भेग करने के लिए व्यक्ति प्रयत्न करता है। यह आवश्यक भी है। बिना प्रयत्न के कुछ भी नहीं मिलता। ठीक उसी तरह आत्मा की अनुभूति के लिए साधना और उपासना करने की आवश्यकता है। इसे करने में भी प्रयत्न होता है। यह हमें अपनी मंजिल की ओर अग्रसर करता है। इंन्द्रियों की चंचलता के कारण हमें आत्मा की सवर्था अनुभूति नहीं हो पाती। आनंद के लिए साधना की आवश्यकता है। आदमी सत्य की खोज करता है। व्यवहार में संयम है तो आनंद टिकता है और व्यवहार में कटुता है तो वह इससे वंचित रह जाता है।

आचार्यश्री ने कहा कि अशुद्ध प्रवृति के व्यक्ति को पग–पग पर समस्याओं से रूबरू होना पडता है और शुद्ध विचारों वाले व्यक्ति को सहज रूप से विकास का मार्ग सुलभ होता है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि व्यक्ति सदैव अपने आचार और विचारों का शुद्ध रखने का प्रयास करे। इससे स्वय और समाज का विकास होगा।

नम्रता विनय है और व्यवहार तो अच्छी प्रवृति का लक्षण है। किसी की त्रटि पर उसे क्षमा करने का भाव मन में होना चाहिए। इसे भी शास्त्रों में अच्छा माना गया है। संत

शांत रहे वही संत

आचार्यश्री ने कहा कि संत वही अच्छा होता है जो अपनी प्रवृति को शांत रखता है। अगर वह शांत नहीं है तो उसके संता में कमी है। उसका हृदय कोमल और मन विनम्र होना चाहिए। उसे ऐसा कर्म कभी नहीं करना चाहिए, जिससे किसी को कष्ट हो और राग द्वेष की भावना फैले। वह हमेशा ऐसा कार्य करें जिससे समाज और देश का कल्याण हो। संत वह है जिसके प्रवचनों, संगति और प्रेरणा से प्रभावित होकर सामने वाले का हृदय परिवर्तित हो जाए। उन्होंने पांच धार्मिक लक्षण प्रस्तुत करते हुए कहा कि व्यक्ति की प्रकृति अच्छी है तो वह बडा आदमी बनता है। जीवन में नैतिकता से व्यक्ति की प्रतिष्ठा बढती है। आदमी में अहिंसा और मैत्री की भावना रखनी होगी, तभी समाज विकास ओर बढ सकेगा। मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि व्यक्ति में अनुशासन होना आवश्यक हैं यह दिखने में भले ही कठोर है, लेकिन इससे परस्पर सहयोग और आत्मीयता की भावना बढती है। यह क्षेत्रीय दूरी को कम करता है और किसी भी कार्य में बाधा उत्पन्न नहीं होती।

मेवाड स्तरीय किशोर मंडल सम्मेलन का समापन

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान रविवार को यहां भिक्षु विहार में मेवाड स्तरीय किशोर मंडल सम्मेलन आयोजित किया गया। महा तपस्वी अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित इस सम्मेलन की अध्यक्षता अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष गौतम चंद डागा ने की। तेयुप के अध्यक्ष विकास कोठारी ने बताया कि सुबह नौ बजे किशोर अवस्था और लक्ष्य पर दिनेश कोठारी ने विचार व्यक्त किए। व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष परमेश्वर बोहरा, महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल कोठारी आदि ने
किशोरों को अपने लक्ष्य के प्रति सदैव गंभीर रखने की सीख दी। विचार व्यक्त किए। स्वागत व्यक्तव्य विकास कोठारी ने दिया। केन्द्रीय संयोजन व्यक्तव्य नवीन वागरेचा और प्रेरणा प्रगति पर मुनि योगेश कुमार और मुनि दिनेशकुमार जानकारी दी। सुबह साढे दस से साढे ग्यारह बजे तक जिज्ञासा समाधान एवं खुला प्रश्नमंच आयोजित हुआ। द्वितीय सत्र में दोपहर एक से दो बजे तेयुप की भावी पीढी किशोर मंडल पर अनिल सांखला, किशोर मंडल प्रभार अ भा तेयुप, श्रेयांश कोठारी, अ भा तेयुप कार्यसमिति सदस्य रमेश सुतरिया, अ भा तेयुप के अध्यक्ष गौतमचंन्द्र डागा और अंतिम

सत्र में मुनि हिमांशुकुमार, मुनि कुमार श्रमण मुनि दिनेश कुमार ने विचार व्यक्त किए। सह संयोजक निलेश कोठारी ने बताया कि विकास ग्रुप के प्रयोजन में आयोजित इस सम्मेलन में आमेट, राजनगर, गंगापुर, भीलवाडा, किशनगढ, उदयपुर, कांकरोली, पुर और आसींद क्षेत्रों से आए प्रतिनिधियों ने शिरकत की। आभार की रस्म तेयुप मंत्री लक्की कोठारी ने अदा की।